गणेश चतुर्थी
22 अगस्त 2020

गणपति प्रतिमा से "वास्तु दोष निवारण"

आज इस आधुनिक युग में सभी कुछ बदल गया है। हमारा समाज, हमारा रहन सहन, हमारा पहनावा, हमारा खान-पान यहाँ तक कि हमारे देवताओं की प्रतिमाओं में भी एक नयापन देखने को मिलता है। पहले सिर्फ ठोस पत्थर की ही मूर्तियां प्राप्त होती थी लेकिन आज धातुओं की, मिट्टी की, प्लास्टर ऑफ पैरिस की, प्लास्टिक की और भी ना जाने किन-किन वस्तुओं से मूर्तियां बनायी जाने लगी हैं, इनके स्वरूप में भी बहुत परिवर्तन आ चुका है। पहले जहाँ प्रतिमाएं केवल मात्र मन्दिरों में ही स्थापित की जाती थी, आज घरों में, ऑफिसों में, ड्राईंग रूम में, द्वार पर और भी बहुत-सी जगह लगायी जाती हैं। विशेष रूप से लोग अपने घरों में गणेश जी की मूर्ति स्थापित करना पसन्द करते हैं। भगवान गणेश विघ्न विनाशक एवं मंगल करने वाले हैं अतः सर्वप्रथम उनको ही अधिक महत्व दिया जाता है। साथ ही भगवान गणेश को घरों या ऑफिसों में वास्तुदोष निवारण के लिये भी स्थापित किया जाता है। वास्तु अनुसार भगवान गणेश किस प्रकार हमारा भाग्योदय करते हैं आईये जाने...!!

भारतीय हिन्दू संस्कृति में पंचदेवों और उनमें भगवान श्रीगणेश का अत्यधिक महत्व है। हिन्दू समाज में कोई भी विशेष कार्य श्रीगणेश की पूजा-अर्चना के बिना नहीं होता। सर्वप्रथम भगवान गणेश का ही पूजन किया जाता है, उसके पश्चात् अन्य देवों का। गणेश जी सर्वमंगल की कामना हेतु सर्वजन में प्रिय हैं और अन्य देवों की अपेक्षा अधिक पूज्य और वन्दनीय हैं। प्रत्येक कृत्य को मंगलमय एवं परिपूर्ण बनाने के उद्देश्य से आरंभ में ही श्री गणेश के द्वादश नामों का संकीर्तन इस रूप में किया जाता हैं-

सुमुखश्चकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि।।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।

इन श्लोकों का भाव यह है कि जो व्यक्ति विद्यारम्भ के अवसर पर, विवाह के समय, नगर में अथवा नवनिर्मित भवन (गृहादि) में प्रवेश करते समय, यात्रादि में कहीं बाहर जाते समय, संग्राम के अवसर पर अथवा किसी भी प्रकार की विपत्ति के समय यदि श्रीगणेश के बारह नामों का स्मरण करता है तो उसके उद्देश्य अथवा मार्ग में किसी प्रकार का विघ्न नहीं आता। श्रीगणेश के ये बारह नाम निम्नलिखित हैं- 1. सुमुख, 2. एकदंत, 3. कपिल, 4. गजकर्ण, 5. लंबोदर, 6. विकट, 7. विघ्ननाशक, 8. विनायक, 9. धूमकेतु, 10. गणाध्यक्ष, 11. भालचंद और 12. गजानन।

सामान्य दृष्टि से इन नामों के अर्थ हैं- सुन्दर मुखवाले, एक दांतवाले, कपिलवर्ण के, हाथी के-से कानवाले, लंबे पेटवाले, भयंकर, विघ्ननाशक, वशिष्ट-नायकोचित- गुणसंपन्न, धूम्रकेतु (धुऐं के रंग की पताकावाले) गुणो के अध्यक्ष, मस्तक में चंद्र को धारण करने वाले और हाथी के समान मुखवाले।

श्रीगणेश के द्वादश नामों में प्रथम नाम है-'सुमुख' व्युत्पत्तिकी दृष्टि से इसका अर्थ है-सुन्दर मुखवाला अथवा अच्छा या शोभन है मुख जिसका। अब इस नाम की सार्थकता जानने से पूर्व हमें यह जान लेना चाहिये कि "सुन्दर कहते किसे हैं?" आजकल की परिभाषा के अनुसार गोरी चमड़ी वाले को 'सुन्दर' कहते हैं। भगवान शिव के लिये, जो श्रीगणेश के जनक हैं, 'कर्पूरगौरम्' विशेषण मिलता है और माता पार्वती का भी एक नाम 'गोरी' है और ये दोनों ही गौरवर्ण के थे। यह इसलिये भी सुनिश्चित है कि जहाँ पार्वती होने के कारण इस सहज विशेषता से युक्त हैं, वहीं भगवान् शिव भी कैलाशवासी होने के कारण गौरवर्ण के ही हैं।

यूं तो विघ्न विनायक गणपति के असंख्य अवतार हैं किन्तु हम यहाँ मुग्दल पुराण में वर्णित मुख्य अवतारों का वर्णन कर रहे हैं। इन अवतारों में विघ्न विनायक गणपति के मुख्य आठ अवतार हैं जिनके नाम इस प्रकार हैं-वक्रतुण्ड, एकदन्त, महोदर, गजानन, लम्बोदर, विकट, विघ्नराज और धूम्रवर्ण।

1. वक्रतुण्ड

देवता इंद्र के प्रसाद से मत्सर नामी असुर का जन्म हुआ, उसने दैत्य गुरु शुक्राचार्य से शिव पंचाक्षरी मंत्र (ॐ नमः शिवाय) की दीक्षा ली और भगवान शिव का अनुग्रह प्राप्त करने के लिए घोर तप किया। आशुतोष शंकर ने उसे भगवती पार्वती सहित प्रकट होकर दर्शन दिये और इच्छित वर मांगने को कहा। असुर ने अपने मनोनुकूल वर प्राप्त कर लिये तथा प्रसन्न पार्वती ने उसे एक वर ओर दे दिया-'तुम्हें किसी से भय नहीं रहेगा।'

दैत्यों ने वर प्राप्त अपने आधिपति मत्सर से निवेदन किया कि अब आप

निःसंकोच विश्वविजय करें क्योंकि वर के प्रभाव से आपको कोई भयभीत नहीं कर सकता। अपने गुप्तचरों की इस सलाह को मानकर मत्सरासुर ने विश्वविजय करने का निश्चय किया, फिर असुर ने पाताल लोक पर चढ़ाई कर दी। पाताल के शासक शेषनाग ने उसकी अधीनता स्वीकार कर नियमपूर्वक कर देना स्वीकार कर लिया। पृथ्वी और पाताल को अपने अधिकार में लेकर ही असुर ने सब्र नहीं किया बल्कि स्वर्गलोक पर भी आक्रमण कर दिया। अमरावती को चहुँ ओर से घेर लिया। पराक्रमी इन्द्र भी उसका लोहा न ले सके और इस प्रकार मत्सरासुर स्वर्गलोक का भी अधिपति हो गया।

असुरों के कारण त्रस्त देवता मिलकर कैलाश पर्वत पहुँचे और भगवान शंकर से दैत्यों के उपद्रव की कथा कह सुनाई। दैत्यराज ने जब यह समाचार पाया तो वह कैलाश पर्वत पर जा चढ़ा। वहाँ त्रिपुरारि ने दैत्य से युद्ध किया, किन्तु त्रैलोक्य विजयी दैत्य ने भवानी पति को भी हरा कर उन्हें पाश में बाँध लिया और कैलाश पर्वत को अपने अधीन कर लिया।

देवयोग से भगवान दत्तात्रेय देव समुदाय के बीच आ पहुँचे। देवताओं की दयनीय स्थिति देखकर उन्होंने देवताओं को वक्रतुण्ड के एकांक्षरी मंत्र 'गं' का उपदेश देकर उन्हें अनुष्ठान करने के लिए प्रेरित किया।

समस्त देवताओं सहित भगवान पशुपति भी वक्रतुण्ड के ध्यान के साथ मंत्र का जाप करने लगे। उनकी आराधना से संतुष्ट होकर सद्यः फलदाता वक्रतुण्ड प्रकट हो गये और उन्होंने देवताओं से कहा-'आप लोग चिन्ता न करें, मैं मत्सरासुर के गर्व को चूर-चूर कर दूंगा।'

भगवान वक्रतुण्ड गणों सहित मत्सरासुर की राजधानी पहुँचे। दोनों ओर से घमासान युद्ध होने लगा, किन्तु विजय किसी भी पक्ष की नहीं हुई। अनुचरों की सलाह से जब दैत्यराज पुनः रणभूमि में पहुँचा तो वक्रतुण्ड का उसने बड़ा तिरस्कार किया।

दुष्ट असुर! यदि तुझे अपने प्राणों का मोह है तो मेरी शरण हो जा अन्यथा, तू निश्चय ही यमपुरी को जायेगा। देवाधिदेव वक्रतुण्ड ने प्रभावशाली शब्दों में कहा ।कुछ पुत्रों की मृत्यु से तथा वक्रतुण्ड के महाकाय और भयानकतम स्वरूप को देखकर दैत्यराज डर गया और चरणों में शीश नवा, विनयपूर्वक वक्रतुण्ड की स्तुति करने लगा।

वक्रतुण्ड भगवान गणेश का एक स्वरूप है जिसमें उनकी सूंड मुड़ी हुई है। वैसे वास्तुशास्त्रियों में इस बात को लेकर मतभेद है कि भगवान गणेश की सूंड किस दिशा में मुड़ी हुई होनी चाहिये, दांयी ओर होनी चाहिये या फिर बांयी ओर। अधिकतर लोग भगवान गणेश की बांयी ओर मुड़ी हुई सूंड को महत्व देते हैं और वही घर में स्थापित करते हैं। भगवान गणेश की प्रतिमा मुख्य द्वार पर ऊपर की ओर स्थापित की जाती है। जिससे घर में सकारात्मक ऊर्जा का संचरण होता रहता है। घर के मध्य में भगवान गणेश की सीधी सूंड वाली प्रतिमा स्थापित की जाती है जिससे कि जो ऊर्जा घर में प्रवेश कर चुकी है वह यथावत बनी रहे। घर के मध्य में रहे। ऐसी प्रतिमा घर के आंतरिक वातावरण में संतुलन बनाये रखती है। घर का मध्य भाग जिसे ब्रह्म स्थान कहा जाता है, पृथ्वी तत्व होता है अतः प्रतिमा यदि पीली मिट्टी अथवा पीले रंग की हो तो और भी अधिक उत्तम रहता है। इस प्रकार भगवान गणेश का वक्रतुण्ड स्वरूप हमारे घर से वास्तुदोष निवारण में सहायक रहता है।

2. एकदन्त

महर्षि च्यवन ने मद की सृष्टि की। मद ने महर्षि के चरणों में प्रणाम किया और उनकी सहमति से पाताल लोक में शुक्राचार्य के समीप पहुंचा। शुक्राचार्य ने प्रसन्न हो सहोदर पुत्र मद को अपना शिष्य बना लिया और एकाक्षरी मंत्र 'ह्रीं' की दीक्षा दी। शक्ति ध्यान परायण मद सर्वथा निराहार रह कर तप करने लगा। हजारों वर्ष बीत गये। असुर के इस कठोर तप से सिंहवाहिनी भगवती प्रसन्न हो प्रकट हो गई।

सुख-सुविधाओं से युक्त हो दैत्यराज मद आनन्दपूर्वक जीवन व्यतीत करने लगा। उसकी पत्नी लालसा से तीन पुत्र पैदा हुए-बिलासी, लोलुप और धनप्रिय। अत्यंत शक्ति संपन्न मद ने सर्वप्रथम भूमण्डल पर अपना राज्य स्थापित किया। फिर उसने स्वर्ग पर आक्रमण कर सुरेन्द्र को भी अधीन कर लिया। देवताओं और ऋषि मुनियों के दुःख की सीमा नहीं थी। सर्वत्र हाहाकार होने लगा।

चिन्तित देवगण सनत्कुमार के समीप जा अपनी व्यथा सुनाने लगे तथा असुरों के विनाश और धर्म की स्थापना हेतु उपाय पूछने लगे। सनत्कुमार ने कहा-देवगण! आप श्रद्धाभक्ति पूर्वक एकदंत भगवान की आराधरा करें। उन्हें तपश्चर्या करते सौ वर्ष व्यतीत हो गये तब मूषक वाहन एकदंत प्रकट हुए। तब देवताओं ने कहा-परम प्रभु! दैत्यराज मदासुर के राज्य में हम देवगण स्थान भ्रष्ट और मुनि गण कर्म भ्रष्ट हो गये हैं। आप हमारे विघ्नों का नाश करें और हमें अपनी भक्ति प्रदान करें।

तथास्तु! एकदंत ने कहा।

उधर राक्षसों ने देखा। अत्यंत उग्रमूषकारूढ़ महाकाय नर-कुंजर! चार हाथों में भयानकतम परशु, पाश आदि आयुध। यह भयानक मूषकारूढ़ नर-नाग कौन हैं? दूत ने जब एकदंत का संदेश मदासुर को दिया तो उसे नारद की बात स्मरण हो आई। उसने एकदंत के कर कमलों में अमिट तेजस्वी परशु और पाश देखा। इतने पर भी महा क्रूर असुर मद युद्ध के लिए तत्पर हो गया। मदासुर ने जैसे ही धनुष पर बाण संधान करना चाहा कि तीव्र परशु उसके हृदय स्थल पर आ लगा। असहाय हाय कहकर भूमि पर गिर पड़ा और मूर्छित हो गया।

आश्चर्यचकित असुर ने कुछ देर विचार किया। उसने समझ लिया ये सर्वात्मा, सर्वसमर्थ परमात्मा हैं। स्तुति करके हाथ जोड़कर कहने लगा-प्रभो! आज मुझे आपका दुर्लभ दर्शन प्राप्त हो गया यह मेरा सौभाग्य है। मैं आपकी शरण में हूँ। आप मुझे क्षमा करते हुए अपनी दृढ़ भक्ति प्रदान करें। एकदंत से वर प्राप्त कर मदासुर पाताल लोक को चला गया।

भगवान गणेश का एकदंत स्वरूप भी वास्तुदोष निवारण में बहुत सहायक है। एकदंत नाम में 'एक' शब्द माया को इंगित करता है तो वहीं 'दंत' शब्द एकाधिकार और सत्ता का पर्याय है। भगवान गणेश की एकदंत प्रतिमा स्थापित करने से घर में नकारात्मक ऊर्जा का नाश होता है और आय एवं धन में बढ़ोतरी होती है। भगवान एकदंत की प्रतिमा स्थापित करने से घर में क्लेश का भी हरण होता है, सुख-शान्ति का वातावरण बना रहता है। पारिवारिक सदस्यों की बुद्धि का विकास होता है और उनके मस्तिष्क में सुविचार ही आते हैं जिसके कारण माहौल सौहार्दपूर्ण बना रहता है।

3. महोदर

पूर्व युग में तारक नाम का एक आसुर था। उसने ब्रह्माजी की बहुत दिनों तक आराधना की थी और विधाता से वर प्राप्त कर त्रैलोक्य का स्वामी बन गया था। देवताओं और ऋषियों ने काफी समय तक शिव और शिवा की आराधना की। भगवान आशुतोष चूंकि समाधिस्थ थे इसलिए उन्होंने माता पार्वती की शरण ली।

भगवती ने देवों को उनका कार्य संपादन करने का आश्वासन दिया और अत्यंत रूपवती भीलनी के रूप में शिव के आश्रम में गई। वे वन में सुगन्धित पुष्पों को चुनते हुए मोह उत्पन्न कर रही थी। त्रिनयन की समाधि भंग हुई और उन्होंने बलात् आकृष्ट कर ने वाली लावण्यमयी युवती को ध्यानपूर्वक देखा। प्रलयंङ्कर को देखते ही भीलनी अदृश्य हो गई। तब शिव के द्वारा अत्यन्त उग्र पुरूष मोह उत्पन्न हुआ। ध्यान से पार्वती की लीला समझ भगवान शंकर ने क्रोध में आकर कामदेव को भस्म कर दिया। कामदेव की पत्नी ने महोदर की आराधना की। उन्होंने कामदेव के निवास योग्य शरीर एवं स्थानों का वर्णन करते हुए कहा-महामते! यौवन, नारी और पुष्प तुम्हारे सुन्दर वास स्थान हैं। गान मकरन्द रस, पक्षियों के मधुर कलरव, उद्यान, वसंत और चन्दनादि तुम्हारें सुन्दर आवास हैं। विषयाशक्त मनुष्यों का संग, गुह्य अंगों का दर्शन, मंद-वायु, सुन्दर वास, नये वस्त्र और आभूषणादि-ये सब नाना प्रकार के शरीर मैंने तुम्हारे निमित्त किए हैं।

शिव पुत्र कार्तिकेय ने भी महोदर की आराधना की थी स्वामी कार्तिकेय ने महोदर के षडाक्षर मंत्र (वक्रतुण्डाय हुम्) का सविधि जप किया था। इससे प्रसन्न होकर सद्यः फलदाता गणेश जी ने उन्हें तारासुर को मारकर देवताओं की इच्छा पूर्ण करने का वर प्रदान किया।

वास्तु अनुसार उनका यह रूप अत्यंत कल्याणकारी एवं सभी नकारात्मक ऊर्जा को नष्ट करने में प्रभावकारी है। यदि गणेश का महोदर रूप बैठक या घर के मध्य भाग में स्थापित किया जाए तो अग्नि एवं जल के असंतुलन द्वारा उत्पन्न समस्त वास्तुदोषों का शमन होता है। भगवान गणेश की महोदर प्रतिमा अग्नि एवं जल से उत्पन्न वास्तुदोषों को दूर कर, इन तत्वों में सामंजस्य स्थापित करती है। बुरी नजर, प्रेत बाधा, कार्य में विघ्न, जमीन-जायदाद से संबंधित कष्ट तुरंत दूर हो जाते हैं।

4. गजानन

एक बार धन के राजा कुबेर कैलाश पर्वत पहुंचे ताकि शिव और शिवा के दर्शन प्राप्त कर सकें। वहां जाकर उन्होंने जगतजननी पार्वती और त्रिनेत्रधारी भगवान शंकर का दर्शन लाभ लिया। अपूर्व सौन्दर्य की स्वामिनी भगवती पार्वती को कुबेर अपलक निहारने लगा। उसका इस तरह देखना शिवा को भला प्रतीत नहीं हुआ और क्रोधित हो गई। जगतजननी की कोप-भरी दृष्टि से भयभीत कुबेर से लोभासुर नामक दैत्य उत्पन्न हुआ। लोभासुर अत्यंत पराक्रमी और प्रतापी था।

लोभासुर दैत्य गुरु शुक्राचार्य की शरण में जा पहुँचा और उन्हें शिष्यत्व प्रदान करने के लिये विनती करने लगा। गुरू आज्ञा पाकर असुर ने निर्जन अरण्य में जाकर शुद्ध चित्त हो पार्वती वल्लभ शिव का ध्यान किया और महिमामयी पंचाक्षरी मंत्र का जप करने लगा। प्रसन्न होकर चंद्रमौलि ने उसे सभी से निर्भय होने का वर प्रदान किया। निर्भय लोभासुर ने प्रमुख दैत्यों को एकत्रित कर विशाल सेना बना ली। उन असुरों की सेना के बल पर लोभासुर भूमण्डल का स्वामी बन गया।

पृथ्वी पर एकछत्र राज्य स्थापित करने के पश्चात् सर्वथा लोभासुर ने स्वर्ग पर आक्रमण कर दिया। देवताओं और दानवों के बीच घमासान युद्ध हुआ और अंत में देवताओं को लोभासुर ने पराजित कर दिया।

महर्षि रैम्य ने ब्राह्मणों और देवताओं को गणेशोपासना करने का परामर्श दिया। देव समुदाय एवं ब्राह्मणों ने मूषकारूढ़ गजानन की आराधना-पूजन करना प्रारंभ कर दिया। आराधना से प्रसन्न हो आदि देव गजमुख प्रकट हो गए, उन्होंने देवताओं को निश्चित करते हुए कहा, 'मैं-लोभासुर का गर्व नष्ट कर दूंगा।'

इसके अनन्तर शिव ने लोभासुर को गजमुख माहात्म्य सुनाया। उसके गुरू शुक्राचार्य ने भी उसे गजानन की शरण में चले जाने का परामर्श दिया। लोभासुर ने गणेश तत्व को समझ लिया था इसलिए वह परम प्रभु के चरणों की वन्दना करने लगा।

भगवान गणेश का यह स्वरूप नकारात्मक ऊर्जा का दोहन तो करता ही है साथ ही आध्यात्मिक ऊर्जा का संचरण भी करता है। इस प्रतिमा के स्थापित होने से घर में आध्यात्मिक वातावरण उत्पन्न होता है, भगवद् प्रेम की ओर पारिवारिक सदस्य उन्मुख होते हैं। गजानन का अर्थ होता है-हाथी जैसी मुखाकृति आकृति वाला। गजमुख की कुछ लंबी सूंड, दो बड़े-बड़े कान, तीक्ष्ण दृष्टि लोभ को वश में करने के लिए बहुत कुछ कहती है। उसकी लंबी सूंड हमें स्थिति पहले से भांपने की प्रेरणा देती है। छोटी आंखें तीक्ष्ण विश्लेषण और लंबे कान ध्यान से सुनने की प्रेरणा देते हैं। गजमुख की प्रत्येक विशेषता हमें शांत, धैर्य धारण कर गहन विश्लेषण के उपरांत ही कर्मरत होने का संदेश देती है। भगवान गणेश की यह प्रतिमा यंत्र, मंत्र साधनाओं में भी बहुत सहायक सिद्ध होती है। इस प्रतिमा से योगियों को विशेष लगाव होता है।

5. लम्बोदर-

एक बार भगवान विष्णु के मोहिनी रूप को देखकर शिव कामातुर हो गए। भगवान शिव को कामातुर जान लक्ष्मी पति ने हंसकर मोहिनी रूप को त्याग कर पुष्प रूप धारण कर लिया था। यह देखकर प्रलयंकर खिन्न हो उठे। उनका रेतस स्खलित होकर भूमि पर गिर पड़ा।

असुर गुरू ने कुछ देर ध्यान मग्न होकर अपने योग बल से जान लिया कि अमुक असुर कौन हैं। असुरों के हितैषी शुक्राचार्य ने उसे सौर मंत्र (ॐ घृणि सूर्य आदित्य ॐ) की दीक्षा दी। क्रोधासुर ने इस गुरू प्रदत्त मंत्र का अरण्य में जा दत्तचित्त हो दीर्घकाल तक जप किया। वह सूर्य मंत्र का जप किया करता था।

भुवन भास्कर दैत्य के तप से प्रसन्न हो गए और प्रकट होकर बोले-'वर मांगो।' भगवन को अपने सम्मुख देख असुर ने भक्ति पूर्वक उन्हें प्रणाम किया। सूर्यदेव ने उसे वर प्रदान कर दिया-तुम्हारा अभीष्ट सफल होगा।

क्रोधासुर ने परम नीतिज्ञ शुक्राचार्य को आदरपूर्वक बुलाकर उनकी अर्चना की। दैत्यगुरू ने उसे अत्यंत सुन्दर विलासपुरी में दैत्यराज के पद पर नियुक्त किया।

भूमण्डल को जीतने के पश्चात् असुर ने अमरावती पर चढ़ाई करके उसे भी अपने अधीन कर लिया। इसी प्रकार दैत्य का वैकुण्ठ और कैलाश पर्वत पर आधिपत्य स्थापित हो गया।

अत्यंत दुःखी देवताओं और ऋषियों ने गणेश की आराधना की, आराधना से प्रसन्न होकर लंबोदर ने समुदाय को दर्शन देकर कहा-'देवताओं और ऋषियों! आप लोग चिन्ता न करें, मैं क्रोधासुर का अहंकार चूर्ण कर दूंगा।'

क्रोधासुर ने लंबोदर के सम्मुख देखकर कहा-मूर्ख लंबोदर! तू मुझे ब्रह्माण्ड विजय शूरवीर के सम्मुख युद्ध करना चाहता है, क्या तेरी बुद्धि मारी गई है? तुझे जीवित रहना है तो शीघ्र मेरी शरण में आ जा अन्यथा मैं तेरा यह लंबा उदर एक ही तीर से फोड़ दूँगा।

लंबोदर ने कहा-मेरे वामांग में जो यह सिद्धि है, वह भ्रांति स्वरूप है। सभी लोग सिद्धि के लिए लालायित रहते हैं और भ्रम में पड़े रहते हैं। दक्षिणांग में बुद्धि विराजमान है जो भ्रांति को धारण करती है। बुद्धि से विचार करके फिर मनुष्य उस विषय में भ्रांत होता है। स्वयं बुद्धि चित्त स्वरूपा है, यह पांच प्रकार की होती है। विश्व और ब्रह्म मेरे उदर से उत्पन्न हुआ है, मुझसे ही वह पालित होता है और अंत में मैं ही सबको उदरस्थ करके क्रीड़ा करता रहता हूँ।

तुम्हारे गुरू शुक्राचार्य मुझे जानते हैं। भगवान लंबोदर के वचनों से क्रोधासुर के संशयों का निवारण हो गया और वह परम प्रभु के चरणों में नत हो गया। अंत में लंबोदर की आज्ञा पा उनके चरणों में पुनः प्रणाम कर पाताल लोक को चला गया।

लंबोदर अर्थात् लंबे उदर (पेट) वाला। हमारे पेट (उदर) पर ऊर्जा का एक केन्द्र होता है जिसे मणिपुर चक्र कहते हैं। यह चक्र हमारे बाहरी जगत से संबंधों का होता है। क्रोध (नकारात्मक ऊर्जा) रूपी शत्रु हमारे जीवन को नष्ट करता है। यदि हम अपने क्रोध एवं वो बातें जिनसे क्रोध उत्पन्न होता है उनको पचा सकें तो जीवन को परिवर्तित कर सकते हैं। वास्तु व फेंगशुई की दृष्टि से भी यह रूप हमारे भवन निर्माण से आंगन को विस्तृत, खुला एवं स्वच्छ रखने की प्रेरणा देता है।

6. विकट-

शेषशायी विष्णु जब जालन्धर पत्नी वृन्दा के समीप पहुँचे तो उनके शुक्र से अत्यन्त तेजस्वी कामासुर की उत्पति हुई। कामासुर ने दैत्य गुरू शुक्राचार्य की शरण जा उन्हें दण्डवत प्रणाम किया और विनय पूर्वक बोला- आचार्य प्रवर मुझे शिष्य का कर्त्तव्य पालन करने की आज्ञा प्रदान करें। दैत्य शुभाकांक्षी शुक्राचार्य ने कामासुर को शिव पंचाक्षरी मंत्र की दीक्षा दी।

कामासुर ने देवाधिदेव शंकर भगवान को प्रसन्न करने के लिए अन्न, जल, फल आदि का सर्वथा त्याग कर दिया और महा महिमामय पंचाक्षरी मंत्र का जप करने लगा। कामासुर ने सहस्त्रों वर्षों तक कठोर तप किया। असुर के तप से प्रसन्न कामारि वहां प्रकट हो गए और बोले-'वर वृणु' अर्थात् वर मांगो।

तुम्हारे कठोर तप से मैं अति प्रसन्न होकर तुम्हारा मनोरथ पूर्ण करता हूँ। कामासुर ने अति सुन्दर रति-नामक नगर में अपनी राजधानी बनाई। उसके दरबार में रावण, शम्बर, महर्षि, बालि, और दुर्मद-पांच शूर प्रधान थे। कामासुर इन प्रचण्ड दैत्यों के साथ राजकार्य को चलाने लगा। भूमण्डल के नरपतियों पर विजय प्राप्त करने के लिए चढ़ाई कर दी। असुरों के तीक्ष्णतम वारों की मार से व्याकुल होकर सभी भूपति उसके अधीन हो गए। फिर उसने स्वर्ग पर आक्रमण किया, स्वयं वज्रायुध इन्द्र भी उसके सम्मुख टिक न सके। इस प्रकार त्रैलोक्य को कामासुर ने अपने अधीन कर लिया।

विपत्ति से किस प्रकार त्राण पाया जाय। यह मन्त्रणा करने जब समस्त देव समुदाय एकत्रित था तो उनके बीच महर्षि मुग्दल भी आ पहुँचे। देवताओं ने अर्घ्यादि से ऋषि की अर्चना की और देवाधिदेव शिव ने पूछा-महर्षि! हमें कामासुर से त्राण पाने का उपाय बतलाओ। मुनि श्रेष्ठ मुग्दल ने कहा-आप लोग सिद्ध क्षेत्र मयूरेश में जाकर जप करें। वहां आपके तप से प्रसन्न हो स्वयं भगवान गणेश प्रसन्न होंगे और आपके संकटो का निवारण करेंगे। भक्त वत्सल मयूर वाहन गणेश ने प्रकट होकर कहा-देवताओं! वर मांगो मैं तुमसे अत्यन्त प्रसन्न हूँ।

मयूरेश ने कहा- मैं कामासुर का वध करके समस्त देव समुदाय एवं मुनियों को निरापद कर दूंगा। सत्त्वीर दैत्यों ने देवताओं और मुनियों पर आक्रमण कर दिया। देवगण और मुनि भयाक्रान्त होकर परम प्रभु मयूरेश को पुकारने लगे। पाश अंकुशधारी मयूर वाहन महा विकट गजानन प्रकट हो गए। अपने प्रबलतम सैनिको के

साथ कामासुर भी पहुँचा, दोनो ओर से घमासान युद्ध होने लगा।

उस भीषण युद्ध में कामासुर के दो प्रिय पुत्र शोषण और दुष्पुर मारे गए। हंसते हुए मयूर वाहन विकट ने उत्तर दिया- असुर! तूने शिव वर के प्रभाव से बड़ा अधर्म किया है। अपने गुरू शुक्राचार्य के उपदेश को स्मरण करके मेरे स्वरूप को समझ, यदि तू जीवित रहना चाहता है तो मेरी शरण में आ जा अन्यथा तू निश्चय ही मारा जाएगा। मयूर वाहन के नीतिपूर्ण वचन सुनकर कामासुर अत्यन्त कुपित हुआ। उसने अपनी भयानक गदा मयूर वाहन पर फेंकी किन्तु वह गदा परम प्रभु को स्पर्श न कर पृथ्वी पर गिर पड़ी। यह देख दैत्यराज कामासुर सहसा मूर्छित होकर गिर पड़ा।

कामासुर ने आश्चर्यपूर्वक अपने मन से विचार किया- इस अद्‌भूत देव ने बिना शस्त्र के ही मेरी ऐसी दुर्दशा कर दी और यदि यह शस्त्र का प्रयोग करेगा तब न जाने क्या होगा? युद्ध में तो यह निश्चय ही मुझे मार डालेगा। मन में अनेक विचारों को विचारकर उसने भगवान विकट से अनेक प्रश्न किए और जब उसे उनका समाधान मिल गया तो वह दयामय मयूर वाहन विकट की शरण में हो गया।

मयूर वाहक विकट रूप धारण कर श्री गणेश ने कामासुर को परास्त किया था। काम पर विजय केवल आध्यात्मिक जागरण द्वारा ही संभव है। हमारे अंतिम चक्र (मूलाधार) और प्रथम चक्र (आज्ञा) का यह संबंध सर्पाकार है।

वास्तुशास्त्र में यह गणेश रूप भवन निर्माण में बहुत ही अहम भूमिका निभाता है। मुख्य द्वार की स्थापना की दिशा के साथ ही भवन का अंतिम द्वार (बैक डोर) और शौचघर की स्थिति का निर्धारण किया जाता है। ईशान कोण में देवालय और नैऋत्य कोण में शौचघर एक ही तिरछी रेखा में रखने का प्रावधान है। इसी रूप की भांति हम दक्षिण पश्चिम, उत्तर-पूर्व, और केन्द्र को हम पृथ्वी तत्व की दिशा मानते हैं जो हमारे काम केन्द्र से ही संबंधित है।

7. विघ्नराज-

विवाहोपरान्त हिमगिरिनन्दिनी एक दिन अपनी सखियों के साथ बात करती हुई हंस पड़ी। उनके हास्य से एक मनोरम पर्वताकार एक महानू पुरुष उत्पन्न हो गया। उसे देख अत्यन्त चकित हुई शिवप्रिया ने पूछा-''तुम कौन हो, कहाँ से आये हो और क्या चाहते हो?''

विनयपूर्वक उस पर्वताकार पुरुष ने उत्तर दिया-''माता! मैं अभी-अभी आपके हास्य से उत्पन्न हुआ हूँ अतः आपका पुत्र हूँ। आप मुझे आज्ञा प्रदान करें, मैं उसका पालन अवश्य करूँगा।

माता पार्वती बोलीं-''मैं अपने प्राणाधार से मान किये बैठी थी, उस मान की स्थिति में तुमने जन्म लिया है, अतः मानपरायण तुम्हारा नाम मम (ममता) होगा। तुम जाकर गणेश का स्मरण करो, उनके स्मरण से तुम्हें सब कुछ प्राप्त हो जाएगा।''

अरण्य में ममता की भेंट शम्बरासुर से हुई। पार्वती पुत्र ने उससे पूछा-''महाभाग! आप कौन हैं तथा यहाँ कैसे पधारे हैं?''

शम्बर ने उत्तर दिया-''शिवापुत्र मम! मैं तुम्हें विद्यादान करने आया हूँ।

इतना कहकर शम्बर ने मम को नाना प्रकार की आसुरी विद्याएं सिखा दी। उन विद्याओं के अभ्यास से ममता कामरूप हो गया। वह बहुत शक्तिशाली हो गया। शम्बरासुर ने ममता को समझाया, ''अब तुम अमिट शक्तिशाली बनने के लिए विघ्नराज की उपासना करो। उनके प्रसन्न होकर प्रकट होने पर उनसे सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का राज्य और अमरण वर के अतिरिक्त अन्य कुछ मत मांगना।''

इस प्रकार उसे तप करते सहस्त्रों वर्ष बीत गये। प्रसन्न होकर गणनाथ प्रकट हुए। उन्होंने ममता से कहा-''मैं तुम्हारे कठोर तप से प्रसन्न हूँ, तुम इच्छानुसार वर माँग लो।'' ममता ने कहा यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो कृपापूर्वक मुझे ब्रह्माण्डनायक होने का वर प्रदान करें।

''मैं तुम्हारे तप से प्रसन्न हूँ इसलिए तुम्हारी इच्छापूर्ति का वर प्रदान करता हूँ।''

कुछ समय बाद शम्बासुर शुक्राचार्य के पास पहुँचा और उन्हें ममता के वर प्राप्त करने का वृतान्त सुनाया। यह सुनकर शुक्राचार्य बड़े प्रसन्न हुए और समस्त असुर समुदाय को सूचित कर स्वयं शम्बरासुर के साथ ममतासुर के भवन पहुँचे। ममतासुर ने शुक्राचार्य के चरणों में प्रणाम कर उनके सम्मुख ब्रह्माण्ड विजय की इच्छा व्यक्त की। ममतासुर ने अपने वीर पुत्रों और पराक्रमी सैनिकों के द्वारा पृथ्वी और पाताल पर अधिकार कर लिया। इस विजय के पश्चात् उसने स्वर्ग पर आक्रमण कर दिया। स्वर्ग ममतासुर के अधीन हो गया।

ममतासुर के कारागार में बन्दी देवगणों ने एकत्र होकर मुक्ति का उपाय सोचने का निर्णय लिया। भगवान विष्णु ने कहा-''हमें विघ्नेश्वर की आराधना करनी चाहिए। उनकी प्रसन्नता से ही असुर विनाश और धर्म की स्थापना हो सकेगी।''

भाद्रपद की चतुर्थी को मध्याह्न में एक वर्ष व्यतीत होने पर विघ्नेश्वर प्रकट हो गये। उसी समय देवर्षि नारद ममतासुर के सम्मुख पहुँचे। देवर्षि ने ममतासुर से कहा-''मुझे शेषवाहन विघ्नराज ने भेजा है। वे सर्वात्मा, सर्व समर्थ, सर्वपालन एवं अधर्म के शत्रु हैं। उन्हीं के कारण तुम शक्तिमान बने हो। तुम्हारे कारण धर्म लुप्त हो गया है अतः विघ्नेश्वर ने आज्ञा दी है कि तुम तुरन्त इस अधर्म और अनाचार को समाप्त कर उनकी शरण में चले जाओ, अन्यथा तुम्हारा सर्वनाश निश्चित है।''

ममतासुर युद्ध के लिये तत्पर हो गया। वह अपने दोनों पुत्रों और अजय वाहिनी सेना के साथ पृथ्वी को कम्पित करता युद्ध क्षेत्र में आ पहुँचा। मत्त एवं निरंकुश दानव ममता की दुष्टता देखकर विघ्नराज कूपित हो गये और उन्होंने अपना कमल असुर सैन्य के बीच छोड़ दिया। कमल की गन्ध से सभी असुर सर्वथा अशक्त एवं मूर्छित हो गये।

ममतासुर काफी देर तक मूर्छित रहने के पश्चात् जब चेतना में आया तो उसने अपने समीप कमल को देखा। यह देख वह विघ्नराज के चरणों में गिर पड़ा और दीन होकर अपने कर्मों की क्षमा मांगने लगा। दयामय गजमुख प्रसन्न हुए और उन्होंने उसे अपनी भक्ति देते हुए कहा-''तुम अपने स्थान पर मेरी आराधना में लगे रहकर निर्भयतापूर्वक निवास करो। दैत्यराज ने विघ्नराज के चरणों में प्रणाम कर उनकी आज्ञा शिरोधार्य कर ली। समस्त देवगण मुक्त होकर विघ्नराज के गुणगान करते अपने निवास को चले गये।

कहते हैं कि श्री गणेश ने अपने कमल पुष्प की गंध द्वारा समस्त

गृह-क्लेश
निवारण कवच
प्रायः हर व्यक्ति आज तनावग्रस्त हैं, संयुक्त परिवार में जहाँ सास-बहू , ननद-भाभी के झगड़ो को गृह-क्लेश का कारण बनाकर लोगो ने आये दि पति-पत्नी मे अनबन, तो बच्चों मे तकरार, गृह-क्लेश तो पीछा ही नहीं छोड़ रहा, यदि आप की तमन्ना है,कि घर मे खुशियाँ हो अपार, सुख-शांति का हो वास तो क्यों है उदास हैं आपके पास...............
न्यौछावर राशि 2100/- रू.

अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें-
त्रिनेत्र सिद्धि केन्द्र
'त्रिनेत्र भवन' प्लोट नम्बर-1, महावीर नगर, गौरव पथ, पॉलिटेक्निक कॉलेज के मैन गेट के पास, जोधपुर (राज.)
फोनः 0291-2621625, 2615625, 2618625, 2440111, 2440999 टेलीफैक्सः 0291-2618625
E-mail: tantravtj@yahoo.com Visit us: fameandfortune.org

दैव्य सेना को मूर्छित कर दिया था। श्री गणेश को कमल पुष्प पर विराजमान या उनके हाथ में कमल पुष्प की उपस्थिति वाली आकृति समस्त विघ्न का हरण करती है। फेंगशुई में भी हृदय सूत्र (ॐ मणि पहने हुम्) द्वारा विघ्न हरण या वस्तुओं को ऊर्जावान् करने का प्रावधान है। भगवान गणेश का यह स्वरूप स्वयं ऊर्जा उत्पन्न करने में सक्षम है, इसे आप घर के मध्य में या ड्राईंग रूम में स्थापित कर सकते हैं। इससे घर में आने वाली मुसीबतों में कमी आती है।

8. धूम्रवर्ण-

एक बार लोक पितामह ब्रह्माजी ने तिमिरारि को कर्मराज्य के अधिपति के पद पर अभिषिक्त कर दिया। राज्य पद पाकर सूर्य देव के मन में अहंकार का उदय हो गया। वे मन में सोचने लगे- कर्म के प्रभाव से ब्रह्मा सृष्टि की रचना करते हैं, कर्म से विष्णु जगत का पालन करते हैं। कर्म के द्वारा शिव संहार करने में समर्थ हैं और कर्मों के फलस्वरूप शक्ति जगत की पालिका और पोषिका है। निसंदेह समस्त जगत कर्माधीन हैं और मैं उन कर्मों का संचालन देवता हूँ। अतः सभी मेरे अधीन हैं।

सूर्यदेव के मन में ऐसा अहम् भाव पैदा होते ही उन्हें छींक आ गई और उस छींक से एक महाबलशाली पुरूष उत्पन्न हुआ। वह बलशाली पुरूष दैत्य गुरू शुक्राचार्य की शरण में जाकर बोला प्रभो मेरा संस्कार करो। आचार्य प्रवर ने ध्यानावस्था में आने वाले के बारे में जान उसका नाम अहम् रखा। अहम् को उन्होंने गणेश के सोलह अक्षरी मन्त्र की (ॐ गं गौ गणपतये विध्नविनासिने स्वाहा) दीक्षा दी। असुर गुरू की आज्ञा पाकर वह वन को चला गया।

अरण्य में जा अहम् ने निराहार रहकर धूम्रवर्ण भगवान का ध्यान करते हुए दीर्घकाल तक मन्त्र जप किया। अहम् की भक्ति से प्रसन्न हो धूम्रवर्ण प्रकट हो गए और बोले- वरं वृणु अर्थात वर मांगो। अहम् ने ब्रम्हाण्ड का राज्य मांगा और देवाधिदेव गणेश ने तथास्तु कहा और अन्तर्धान हो गए।

अंहतासुर के लिए विषय-प्रिय नामक सुन्दर नगर बसाया। अहम् को योग्यतम पात्र समझकर प्रमंादासुर ने अपनी रूपवती पुत्री ममता का पाणिग्रहण उसके साथ कर दिया। कुछ समय बाद अहम् के श्वसुर प्रमादासुर ने उसे कहा- तुमने ब्रम्हाण्ड विजय का वर प्राप्त कर लिया है। फिर व्यर्थ में समय क्यों खो रहे हो। त्रैलोक्य को विजय कर सुखोपभोग करो।

सर्वत्र अहंकारासुर का साम्राज्य स्थापित हो गया। देवता ऋषि एवं धर्मात्मा लोग वनों में कन्दराओं में जा छिपे। सभी देवताओं ने विचार-विमर्श किया कि भगवान धूम्रवर्ण की कृपा से अहम् ने यह सब कुछ पाया था, किन्तु अब वह उन्हें सर्वथा भूल बैठा है अतः हम लोगों को उन्हीं का स्मरण कीर्तन करना चाहिए। देवताओं की आराधना से मूषक ध्वज प्रसन्न हो गए तथा प्रकट होकर बोले- ''मैं अहंकारासुर का वध करूंगा। भगवान धूम्रवर्ण ने स्वप्न में दैत्यराज को दर्शन किया। देवाधिदेव की विकराल डरावनी मूर्ति देख असुर भयभीत हो गया और उसने अपने स्वप्न की बात असुरों को बतलाई।

स्वप्न का फल न होते देख गजमुख ने देवर्षि को दूत बना कर भेजा। देवर्षि के समझाने पर असुर जब नहीं माना तो गजमुख ने अपना पाश छोड़ दिया, पाश जहाँ असुरों को देखता वहीं बांध कर समाप्त कर देता। शुक्राचार्य ने उसे गणेश तत्व समझाते हुए उनकी शरण में होने का परामर्श दिया।

धुएं जैसे रंग वाले गणेश जी ने एक दैत्य का वध किया जो सूर्य की छींक द्वारा उत्पन्न हुआ था। यानि सूर्य द्वारा त्यागा हुआ। ज्योतिष शास्त्र में राहु ग्रह भी धूम्र वर्ण का, सूर्य, पृथ्वी एवं चंद्रमा के एक विशिष्ट स्थिति में आ जाने पर उत्पन्न होने वाला छाया ग्रह है। राहु ग्रह की शांति के लिए सूर्य (प्रकाश) को जाग्रत करना उसके कुप्रभावों से मुक्ति दिलाता है। वास्तु व फेंगशुई में इसी कारण घर को बुरी नजर से बचाने के लिए मुख्य द्वार पर घोड़े की नाल या स्वयं श्री गणेश को विराजमान करने का प्रावधान है। गणेश जी का यह स्वरूप अनिष्ट ग्रहों की शान्ति में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस रूप को भी मुख्य द्वार पर स्थापित किया जाता है।

इस प्रकार गणपति की आठों अवतारों की प्रतिमाएँ स्थापित करके हम विभिन्न प्रकार के वास्तु दोषों का निराकरण कर सकते हैं।

♦♦♦

कालसर्प योग

एक महाविनाशकारी पीड़ादायक योग

कालसर्प योग एक भयानक पीड़ादायक योग है जो व्यक्ति के जीवन को अत्यंत दुःखदायी बना देता है। उस व्यक्ति के जीवन में किसी न किसी महत्वपूर्ण वस्तु का अभाव बना ही रहता है। चाहे वह व्यक्ति पूर्ण प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू हो अथवा विश्व में बेहद चर्चित बिगबुल हर्षद मेहता। इस योग ने सभी को कष्ट दिया है। कालसर्प योग को लेकर जन सामान्य में अनेक भ्रांतिया हैं। इस योग की शान्ति के लिये आये दिन धूर्त ज्योतिषियों द्वारा कई प्रकार से पैसा ठगने की बात सामने आती है जबकि उस जातक को कालसर्प योग होता ही नहीं है। अतः सावचेत रहें। अगर आप वाकई कालसर्प योग के प्रभाव में हैं तो समय पर कालसर्प योग की शान्ति के लिये इन प्रामाणिक उपायों का सहारा लें।

कालसर्प दोष शान्ति हेतु विशेष सामग्री—1.सम्पूर्ण कालसर्प यंत्र 2.कालसर्प यंत्र 3.कालसर्प यंत्र पैंडल 4.कालसर्प यंत्र मुद्रिका 5.कालसर्प यंत्र पिरामिड (यंत्र, पैंडल व मुद्रिका स्वर्ण, चांदी, ताम्र में उपलब्ध)

आप सीधे ही बैंक एकाउन्ट में भी पैसा जमा करवा सकते हैं।

HDFC Bank A/c No. 014-225-6000-5331

(All Amount Payble at Jodhpur Account)

सामग्री प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें

त्रिनेत्र सिद्धि केन्द्र

'त्रिनेत्र भवन' प्लोट नम्बर—1, महावीर नगर, गौरव पथ, पॉलिटेक्निक कॉलेज के मैन गेट के पास, जोधपुर (राज.)

फोनः 0291—2621625, 2615625, 2618625, 2440111, 2440999 टेलीफैक्सः 0291—2618625

E-mail: tantravtj@yahoo.com Visit us: fameandfortune.org